बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

नहमदोहू व नोसल्ली अला रसूलेहिल करीम० अम्माबाद०
आऊज़ु बिल्लाहे मिनश्-शैतानिर-रजीम०
बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अलयौमा अकमलतो लकुम दीनकुम व अतममतो अलैकुम नै-मती व रदीतु लकुमुल इस्लामा दीना (पारा ६ सूरह माईदा)

मतलब :– आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और अपनी नेअमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम दीन चुन लिया।

मेरे भाइयों ! सबसे पहले तो आपको रमज़ानुल मुबारक की सआदत मिलने और रमज़ानुल मुबारक में रोज़े रखने और इस काम के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से तौफ़ीक़ मिलने पर मुबारक बाद देता हूँ। यह मामूली नेअमत नहीं है।

इसके लिए अल्लाह तआला ने बड़े वादे फ़रमाए हैं और अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी ख़ुशख़बरियाँ सुनाई हैं। जिसने रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे (अल्लाह-तआला के वादों पर यक़ीन करते हुए) और इसके अज्रो सवाब की लालच में तो उसके सब पिछले गुनाह माफ़ हो गए।

बज़ाहिर यह आख़री जुमा है। (जुमअतलु विदा है) इसके बाद जो रोज़े बाक़ी हैं। अल्लाह-तआला उनको रखने के तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और शबक़दर की दौलत और नेअमत भी अता फ़रमाए। हमारी और आपकी आजिज़ाना दुआओं को अल्लाह-तआला क़बूल फ़रमाए जो इस मुबारक माह में की गई हैं। आमीन०

मैं आपके सामने ज़ाहिरी तौर पर एक नई बात कहने वाला हूँ, लेकिन वह नई बात नहीं है। वह बात अल्लाह-तआला और उसके रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम से ही साबित है। (इसकी

www.abulhasanalinadwi.org

बुनियाद क़ुरआन मजीद पर ही है) लेकिन बहुत से भाईयों के लिए नई होगी। और नई चीज़ की ज़रा इज्ज़त होती है, चाहत होती है और उससे आदमी का दिमाग़ ज़रा ताज़ा हो जाता है। बैदार और उस बात को सोचने के लिए तैयार हो जाता है वह यह कि :—

रोज़े दो तरह के हैं

एक छोटा रोज़ा, एक बड़ा रोज़ा। इसमें छोटे रोज़े की तोहीन (बेइज्ज़ती नहीं है) इस रोज़े के वक्त और ज़माने के लिहाज़ से कह रहा हूँ कि छोटा रोज़ा कितना ही बड़ा हो १३, १४ घण्टे का रोज़ा होगा यह वह रोज़ा है जो जवान होने पर (बालिग़ होने पर) मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ होता है। यह सुबह सादिक़ से शुरू होता है और सूरज डूबने तक क़ायम रहता है। इस रोज़े के क़ानून और शरई एहकाम हैं जो सब आपको मालूम ही हैं कि इस रोज़े में आदमी खा, पी, नहीं सकता है और जो चीज़ें मना हैं उनसे फ़ायदा नहीं उठा सकता है। उससे मज़ा नहीं लिया जा सकता है। यह रोज़ा चाहे २९ दिन का हो या ३० दिन का हो। इसमें कुछ पाबनदियाँ हैं। (खाने, पीने की और उन चीज़ों की जिनको आप सब जानते हैं और जानना भी चाहिए, ताल्लुक़ात की मामलात की है) जो कि रमज़ान के सिवाए जाईज़ हैं और सवाब भी होता है।

मगर एक बड़ा रोज़ा भी है। इस बड़े रोज़े से लोग नावाक़िफ़ और ग़ाफ़िल भी हैं। मैं थोड़ी देर चाहता हूँ कि आप ग़ौर करें और सोचें कि इस रमज़ान के रोज़े के सिवाए और कौन-सा रोज़ा है ? वह बड़ा रोज़ा और कौनसा होगा ? गर्मी के रोज़े और बड़े होते हैं। क्या ईद का रोज़ा बताने वाला हूँ या शाबान का रोज़ा (१५वाँ) बताने वाला हूँ। मैं कौन-सा रोज़ा बताने वाला हूँ ?

बड़ा रोज़ा है इस्लाम का रोज़ा

इस्लाम है खुद एक बड़ा रोज़ा और यह सब रोज़े और ईदें भी बल्कि रोज़े, नमाज़ भी यहाँ तक कि जन्नत भी अल्लाह तआला अता फ़रमाएगा। वह सब इस इस्लाम के रोज़े के तुफ़ैल में है।

www.abulhasanalinadwi.org

असल बड़ा रोज़ा वह इस्लाम का रोज़ा है

वह कब ख़त्म होता है ? कब शुरू होता है ? यह भी सुन लीजिए। वह रोज़ा मुसलमान पर जो मुसलमान के घर में पैदा हुआ। कलमा पढ़ने वाला है उस पर फ़र्ज़ होता है। (लाइलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदुर रसूलुल्लाह) बुलूग़ के बाद (जवान होने के बाद) और जो नया इस्लाम लाए (कलमा पढ़े) वह रोज़ा उस पर उस वक्त से शुरू होता है। जब से कलमा पढ़ा और मुसलमान हुआ।

जो पैदाइशी मुसलमान हैं यह ख़ुदा के फ़ज़्लो करम से अल्लाह तआला की बड़ी नैमत है। अल्लाह तआला नसीब फ़रमाए और यह रोज़ा कब खत्म होगा यह भी सुन लीजिए। रमज़ान का रोज़ा तो सूरज डूबने पर ख़त्म हो जाता हैं। मगर यह दूसरा रोज़ा तो उम्र का सूरज डूबने लगता है तब ख़त्म होगा और इस रोज़े का अफ्तार क्या है। आप अच्छे से अच्छा मशरूब समझ लीजिए (पीने की चीज़) मशरूबात सुनकर आपके मुँह में पानी भर आएगा। इसलिए में मशरूबात का नाम नहीं लेता। अगर नाम लूँगा तो आबे-ज़मज़म का लूँगा। यह रोज़ा आबे-ज़मज़म से खुलता है या दूसरी पीने की चीज़ों से या खजूर वगैरह से। वह बड़ा रोज़ा किससे खुलेगा ? हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महबूबे रब्बुल आलमीन शफ़ीउल मुज़नबीन, सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्त मुबारक से जामे तहूर से खुलेगा। **जामे कौसर** से खुलेगा। अगर वह रोज़ा पक्का है और उस रोज़े की शरतें आपने पूरी करदी हैं और महज़ अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और उसके फ़ज़्लो करम से हम दुनिया से कलमा पढ़ते हुए गए। हमारी रूह इस हालत में निकली कि ज़बान पर कलमा **लाइलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदुर रसूलुल्लाह०** और हमारे दिल में नूरे ईमान था। हमारे दिमाग़ में अल्लाह तआला से मुलाक़ात और हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करने का शौक़ था। तो वह बड़ा रोज़ा उस वक्त ख़त्म होता है। इसका अफ्तार क्या है ? इसकी महमानी क्या है ? वह है जिसकी महमानी पर आदमी जान दे दे और जान दी है। अल्लाह

तआला के सैकड़ों, बल्कि हजारों, लाखों, आदमियों ने इस शौक़ में जान दी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब हो, अल्लाह के रसूल के सामने हम हों तो वे हमसे ख़ुश हों, राज़ी हों।

आप जो जिहाद और ग़ज़वात के वाक़िआत और जंगों के क़िस्से पढ़ते हैं, तमाम मुल्क (देश) फ़तह हुए ख़ुशी-ख़ुशी जानें दीं, बल्कि ऐसा शोक़ था कि एक बच्चा **ओहद** की जंग के मौक़े पर आया। उसने कहा या रसूलुल्लाह ! मुझे इजाज़त दे दीजिए। आपने इरशाद फ़रमाया अभी तुम छोटे हो। उसने कहा, नहीं मैं छोटा नहीं, लड़ सकता हूँ और बड़ी ख़ुशामद की इलतिजा की, किसी बड़े साहबी ने सिफ़ारिश भी करदी तो आपने लड़ने की इजाज़त दे दी दूसरे साहबज़ादे (छोटे लड़के) एक और आए जो ज़रा छोटे थे कहने लगे आपने इन्हें इजाज़त दे दी है मुझे भी इजाज़त दे दीजिए। आपने (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने) फ़रमाया कि तुम अभी बच्चे हो। इस पर उसने अर्ज़ किया कि आपने जिन को इजाज़त दी है। उनसे कुश्ती लड़वाकर देख लीजिए। उनको में पछाड़ दूँ तो मुझे भी इजाज़त दे दीजिए। (यह बच्चों का शौक़ था) कुश्ती हुई। उसने वाक़ई पहले वाले बच्चे को पछाड़ दिया और आपने उसको भी इजाज़त दे दी और वह शहीद भी हुए।

और सुनिए ! हज़रत अब्दुररहमान बिनऔफ़ रदी-अल्लाहो तआला अन्हो से दो भाईयों ने कहा कि हमें अबूजहल को दिखाईए। हमने सुना है कि वह मरदूद हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करता रहता है, पहले ने कहा मैं उसको कत्ल करना चाहता हूँ दूसरे भाई ने भी यही कहा कि में भी उसको मारने का शर्फ़ हासिल करना चाहता हूँ। हज़रत अबदुर्रहमान बिनऔफ़ रदीअल्लाहो तआला अनहो ने दोनों को अबूजहल को बता दिया वह दोनों फ़ौरन उस तरफ़ लपक पड़े और अबूजहल का काम तमाम कर दिया।

तो इस रमज़ान के रोज़े का जिसको ख्याल रहता है और टूटा-फुटा रोज़ा हम रखते हैं। मगर बहरहाल खाने-पीने से और उन तमाम चीज़ों से बचते रहते हैं, जो इस रोज़े में मना की गई हैं। मगर उस बड़े रोज़े का ख्याल बहुत

www.abulhasanalinadwi.org

कम लोगों को है। हालाँकि यह छोटा रोज़ा (रमज़ान का रोज़ा भी) हम लोगों को उस बड़े रोज़े के तुफ़ैल में ही मिला है। उस बड़े रोज़े की बरकत से मिला है। गौया समझिये कि उस बड़े रोज़े के इनाम में मिला है और यह ईद जो आ रही है वह भी उसी बड़े रोज़े के तुफ़ैल में मिली है। यह रोज़ा बड़ी फ़ज़ीलत की चीज़ है, अपनी जगह पर और ईद भी इस इस्लामी रोज़े की खुशी और तुफ़ैल में मिली है। **अगर इस्लाम न होता तो, न नमाज़ होती न रोज़ा होता, न कलमा होता** और देख लीजिए जहाँ इस्लाम नहीं है, वहाँ न ,नमाज़ है, न, रोज़ा है, नहीं कलमा है, न, अल्लाह तआला पर पक्का यक़ीन है, न उसके एक होने का यक़ीन है, न हश्र का यक़ीन है न क़यामत का यक़ीन है न मरने के बाद दौबारा ज़िन्दा होने का यक़ीन है। **यह यक़ीन की दौलत जो हमको मिली है वह सब इस्लाम की बदौलत ही मिली है।**

हम इन दोलतों को गिना भी नहीं सकते हैं कि क्या-क्या दोलतें हमको मिली हैं। यह सब इस्लाम के तुफ़ैल में ही मिली हैं। इस्लाम के तुफ़ैल में आदमिय्यत मिली है। हमें इंसानियत (मनुष्यता) मिली है। हमें इज़्ज़त मिली है। हमें ताक़त मिली है, हमें रूहानियत मिली है और जो मरने के बाद क़यामत में अल्लाह-तआला की जन्नत मिलेगी। उसका तो पूछना ही क्या? **वला एनुन राअत वलाओज़ुनुन समेअत वलावक़ुउनअला क़लाबिन ख़तर०** नहीं किसी आँख ने देखा, न ही किसी कान ने सुना और नहीं किसी दिल में कोई बात आई।

उस रोज़े का बहुत कम लोगों को ख्याल है। अब हम आपको बताते हैं (मालूम नहीं फिर कभी हमारी आपकी मुलाक़ात हो या न हो) और हमें कुछ कहने सुनने का मौक़ा मिले या न मिले। बड़े काम की बात में आपसे कह रहा हूँ कि इस रोज़े में पानी पीने से रोज़ा टूट जाता है। खाना ख़ाने से रोज़ा टूट जाता है और वह चीज़ें जो अल्लाह-तआला ने इसमें करने से मना किया है, उनको करने से रोज़ा टूट जाता है। यह रोज़ा टूट जाए तो ६० रोज़े रखना चाहिए तो 'क़ज़ा' होगी।

वह रोज़ा जो इस्लाम का रोज़ा है, हम बताते हैं कि उसमें क्या-क्या चीज़ें

www.abulhasanalinadwi.org

मना हैं (नहीं करने की) उसमें शिर्क मना है। सबसे ख़राब चीज़ जो अल्लाह तआला को नापसंद है वह शिर्क है। **इन्नलल्लाहा ला-यग़फ़िरो अय्युशर-का बिही व यग़फिरो मादूना ज़ालिका लिमयं यशाअ** (पारा ५ सूरह निसा, रुकुअ १५)

बेशक अल्लाह तआला इस बात को नहीं बख्शेगा कि उसके साथ किसी को शरीक (साथी) क़रार दिया जाए और इसके सिवाय जितने गुनाह हैं जिसके लिए मंज़ूर होगा वह गुनाह बख्श देगा।

क़ुरआन शरीफ़ में साफ़ आता है कि अल्लाह तआला शिर्क को माफ़ नहीं फरमाएंगे। बाकी जिसको चाहेंगे माफ़ फ़रमा देंगे।

शिर्क क्या है? आप सुन लीजिए। उसको सब बुरा समझते हैं। आप भी बुरा समझते होंगे। शिर्क यह है कि यह दुनिया अल्लाह तआला की बनाई हुई है वही इसको चला रहा है। **"अला लहूल ख़ल्क़वल अम्र"** उसी का काम है पैदा करना, उसी का काम है चलाना इसको मानते हैं कि ख़ालिक़ अरज़ो समावात (ज़मीन, आसमान को पैदा करने वाला) और काईनात चलाने वाला तो अल्लाह तआला ही है। लेकिन चलाने के बारे में बहुत से भाई ऐसे हैं जिनके दिल में यह बात नहीं आती है और उनके दिमाग़ में यह बात पूरी तौर से नहीं बैठती है और उसने अपनी जगह हासिल नहीं की है वह ऐसा समझते हैं कि सब दुनिया तो अल्लाह तआला ने बनाई "कुन फ़यकून" कह दिया बस बन गई लेकिन चलाने में जैसे कोई बादशाह होता है कि कोई काम किसी के सुपुर्द कर दे कोई बात किसी के ज़ुम्मे कर दे कि भाई तुम अनाज बांटा करो, भाई तुम ख़ैरात बांटा करो, तुम देखो खाने पीने का ख्याल रखना, अनाज पहुंचा दो, जिस चीज़ की ज़रूरत हो वह पहुंचा दो, कोई बीमार हो उसका इलाज करवादो। अगर अल्लाह तआला ने अपने मक़बूल बंदों के सुपुर्द कुछ कारख़ाने कर दिए हैं तो इसमें अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं होगी उनकी क़बूलियत और बुज़ुरगी की वजह से और अपने इरादे से सुपुर्द किया है और जब चाहे लेले **लेकिन ऐसा नहीं है।**

www.abulhasanalinadwi.org

वलअम्र

दुनिया **ताजमहल** नहीं है कि शाहजहां बनाकर चले गये। अब उसके बाद कोई दीवाल पर कुछ लिखदे धब्बा लगा दे खरोंच दे, कोई हिस्सा तोड़ दे वह कुछ नहीं कर सकते। उनके बस में कुछ नहीं और शाहजहां क्या बड़े से बड़ा बादशाह हो लेकिन याद रखिए यह कारख़ाना आलम बिल्कुल पूरे तौर से उसके ही ज़ुम्मे है जो दुनिया का पैदा करने वाला, हर चीज़ को पैदा करने वाला और वजूद बख़्श ने वाला है **अला लहूल ख़ल्क़ वलअम्र**।

और **इन्नमा अमरोहू इज़ा अरादा शेअन अंययक़ूलो लहूकुन फ़यकून** मतलब : जब अल्लाह तआला किसी चीज़ का इरादा करता है तो कह देता है **हो जा** और वह चीज़ उसी वक़्त हो जाती है।

औलाद देना, रोज़ी देना, क़िस्मत अच्छी बुरी करना, जिताना, हराना, किसी को इज़्ज़त देना, किसी की आई हुई बला को टाल देना। यह सब चीज़ें अल्लाह तआला के ही क़ब्ज़े में हैं वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। इस दुनिया का एक पत्ता भी और एक ज़र्रा भी उसके हुक्म के बग़ैर हिल नहीं सकता, पूरी बागडोर और कुंजी उसके ही हाथ में है। कोई कुछ दे नहीं सकता। आप सब लोग जानते हैं कि ओलिया अल्लाह में और अल्लाह के मक़बूल बंदों में जितनी शोहरत (नामवरी) और जितनी इज़्ज़त और महबूबियत **हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलेह** को है किसी को नहीं है। उनको पीरानेपीर, ग़ोस आज़म, शेख़ुल मशाइख़ और बहुत से अलक़ाब से याद करते हैं उनका इरशाद है "देखो जो कुछ मांगो अल्लाह से मांगो उसकी मिसाल ऐसी है कि एक बादशाह बैठा है कुर्सी पर और आगे एक दरख़्त (झाड़) है उसमें एक क़ैदी को लटका दिया है और तीरों का तरकश अपने सामने रख लिया है और एक तीर उठाता है और उस क़ैदी को मारता है तो बताओ एक आदमी आता है और वह बादशाह को छोड़कर इस क़ैदी से मांगने लगता है तो तुम इस बारे में क्या कहोगे। फ़रमाया की मख़लूक़ की यह हक़ीक़त है अल्लाह तआला के सामने।

एक बात तो यह है कि **तोहीद कामिल होनी चाहिए**। (अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

तआला को पूरी तरह से एक मानना) औलाद वही दे सकता है रोज़ी वही दे सकता है, बिगड़ी वही बना सकता है। क़िस्मत अच्छी बुरी वही कर सकता है। इज़्ज़त वही दे सकता है। बेइज़्ज़ती वही कर सकता है जिलाना मारना, उसी का काम है। न किसी वली के क़ब्ज़े में है न किसी कुतुब या ग़ोस के क़ब्ज़े में है। न किसी अबदाल के क़ब्ज़े में है। किसी के भी क़ब्ज़े में नहीं है। एक बात यहां से लेकर जाइये (और यह वह जगह है जहां से ख़ास तौर पर इस चीज़ की दावत दी गई है और पूरे हिन्दुस्तान में पहुंची है।)

पहले अक़ीदए तोहीद को जांचये कि आप अल्लाह तआला ही को मुसब्बुल असबाब समझते हैं, मुसररफ़ुल काईनात समझते हैं और दुनिया का पैदा करने वाला रोज़ी देने वाला समझते हैं और इस पर पूरा यक़ीन करते हैं।

दूसरी बात क़यामत का यक़ीन और आख़िरत का यक़ीन है और इसके बाद **हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम को आख़री पैग़म्बर मानना, ख़ातिमुन्न बीईन मानना, सय्यदुल मुरसलीन मानना, शफ़ीउल मुज़नबीन मानना और यह मानना कि जो शरीअते इलाही चल रही है वह क़यामत तक चलेगी और यही आख़िरत में काम आएगी** क़यामत तक और किसी की शरीअत नहीं चलेगी। अगर कोई आपके बाद (हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम के बाद) नई शरीअत लेकर आए **वह कज़्ज़ाब और दज्जाल है। मुलहिद है।** दीन का बाग़ी है और वाजिबुल क़त्ल है। क़ादयानी हो बहाई हो या कोई भी हो। **कुछ नहीं शरीअत, शरीअत मोहम्मदी है।** यह क़यामत तक चलेगी और हर जगह चलेगी और इस पर जो चलेगा वही कामयाब होगा। (बड़ी आमन्तो बिल्लाह में जिन बातों पर ईमान लाना बताया गया है उन सब बातों पर ईमान लाते हुए) और मरने के बाद खुश होगा। इसी तरह हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम को जैसा कि पहले अभी ज़िक्र किया खातेमुल मुरसलीन मानना (आखरी रसूल मानना) शफ़ीउल मुज़नबीन मानना (कयामत में गुन्हागार मुसलमानों को बख्शवाने वाले मानना) महबूब रब्बुलआलमीन मानना (अल्लाह तआला के सबसे ज्यादा प्यारे बंदे मानना)

www.abulhasanalinadwi.org

और **आपके लिए वे सब ख़ूबियां जो अल्लाह तआला की ख़ूबियों से टकराए नहीं और मुक़ाबले में नहीं हों। वह सब आपके लिए हैं।** बड़ी बात यह है कि आप हबीबे खुदा (अल्लाह तआला के प्यारे) और जो आपसे मोहब्बत करे अल्लाह तआला उससे मोहब्बत करता है और आपने इरशाद फरमाया **लायूमिनो अहदकुम हत्ता अकूनो अहब्बा इलेहि मिंव वालेदीह व वलदेही वन्नास अजमईन** तुममें से कोई भी मोमिन नहीं हो सकता यहां तक कि वह मुझसे, अपने मां बाप से और अपनी औलाद से और तमाम इंसानों से ज्यादा मोहब्बत करने लगे।

यह रुतबा किसी को नहीं। वली क्या चीज़ हैं किसी नबी और रसूल को भी नहीं, मिला यह मरतबा, दरजा अल्लाह तआला ने आपके लिए रखा था। एक तो यह कि आप की रिसालत पर ईमान और यक़ीन हो। (आपके आख़री रसूल होने का) आपसे मोहब्बत भी हो, और आपकी शफ़ाअत (क़यामत के दिन बख्शवाने का यक़ीन) भी हो और आपके बताए हुए तरीक़े पर चलने का पूरा पूरा ख्याल भी हो। और आप यह पूछे, आप के अंदर यह जज़बा और शोक़ हो कि इस बारे में **शरीअते मोहम्मदी** का क्या मसला है। और आप आलिमों के पास जाकर उसको मालूम करें।

लेकिन अफ़सोस है मुसलमानों में यह बात नहीं रही। शादी ब्याह किस तरीक़े पर हो। हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम का और सहाबा का क्या तरीक़ा था। खुशी का तरीक़ा और रंज ज़ाहिर करने का तरीक़ा भी शरीअत और सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिए। ग़म करना, गाना बजाना और धूमधाम, और शादियों में वह सब काम करना चाहे ब्याज लेकर या ज़मीन बेचकर ज़ेवर गिरवे रखकर, रिश्वत लेकर। मगर काम हो और नाम हो। और हमारी हैसियत ऊंची समझी जाए और लोगों में ऊंचे कहे जाएं और दहेज़ का मांगना और नहीं देने पर लड़की के साथ खराब बरताव करना। जिससे गरदन झुक जाए। कितनी बुरी बात है। और कितना गुनाह है **यह सब शरीअते मोहम्मदी के ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला को नापसंद है।** हम इन सब कामों में पाबंद हैं शरीअत के। सिर्फ़ नमाज़ रोज़े में ही पाबंद नहीं हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

बल्कि ज़िंदगी के तमाम कामों में पाबंद हैं। हर चीज़ में हमारे लिए हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम का तरीक़ा मौजूद है। जिस पर चलना **हमारे लिए ज़रूरी है।**

क़ुल इन कुनतुम तोहिब्बूनल्लाह फत्तेबे ऊनी योहबिब कोमुल्लाह (सूःआल इमरान पारा ३ रुकुअ ११)। मतलब : अगर तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत करना चाहते हो तो मेरी चाल चलो (मैंने जो तरीक़े बताए हैं उन पर चलो। अल्लाह तआला तुमसे मोहब्बत करेगा।

क़ुरआन शरीफ़ में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से फ़रमाया गया कि अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तआला तुमसे मोहब्बत करे और तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत करो तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह तुम्हें महबूब बनाएगा। इससे बढ़कर ओर क्या इनाम दुनिया में हो सकता है ?

तो एक बात यह है कि शरीअत इस्लामी पर अमल हो और शरीअत की बातों को आप अच्छी तरह समझें और उन पर पूरी ज़िंदगी में अमल करें पूरी ज़िंदगी उसके मातेहत (अंडर होना चाहिए) । यह नहीं कि नमाज़ रोज़ा तो बस शरीअत के मुताबिक़ हो। इनके बारे में मसले तलाश करके अमल करते रहें। और निकाह, तलाक़, व्यापार, कारोबार, लेनदेन के बारे में मसले नहीं पूछें। लॉट्री भी चल रही हो। जुवा भी खेला जा रहा है। शराब भी पी जा रही है। टेलीविजन भी दिन रात चल रहा है। (जो **लहवल हदीस** की बेहतरीन तशरीह है।) इसराफ़ और फ़ज़ूल ख़र्ची भी हो रही है। दिखावा भी जारी है। हमसाया क़ौम (हिन्दूओं की) नक़्क़ाली भी चल रही है **यह सब नहीं हो सकता।**

बात यह है कि जिस तरह इस छोटे रोज़े में ग़ीबत मना है। ऐसे ही उस बड़े रोज़े में भी ग़ीबत मना है इसी तरह झूट बोलना, गालियें बकना, रिश्वत लेना और रिश्वत देना ब्याज लेना, देना, फ़िज़ूल ख़र्ची यह सब मना है। तो आप यह समझ कर जाएं कि यह रोज़ा तो इन्शा-अल्लाह तआला ५, ६ रोज़ बाद खत्म हो जाएगा (अगले जमे को शायद ईद हो जाए) उसके बाद हम

www.abulhasanalinadwi.org

आज़ाद हैं। **हरगिज़ नहीं**। हम आज़ाद नहीं हैं वह बड़ा रोज़ा बराबर चलता रहेगा। वह रोज़ा अब भी है बल्कि उस रोज़े का साया इस छोटे रोज़े पर भी है। और यह रोज़ा उस रोज़े का एक हिस्सा है। जो आप रमज़ान के रोज़े रख रहे हो।

मगर बड़ा रोज़ा चलता ही रहेगा। यहां तक कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम से हमारा ख़ातिमा (मौत) ईमान पर फ़रमादे।

सबसे बड़ी चीज़ और आरज़ू तमन्ना करने की यह है बल्कि जिसके लिए जान की बाज़ी लगा देना और जिसके लिए जान क़ुरबान कर देना भी कि अल्लाह तआला ख़ातिमा ईमान पर फ़रमाए। **हमारी ग़रीबी दोस्ती, दुश्मनी, कामयाबी, बेकारी, नाकामयाबी, हर तरह के दुख तकलीफ़ यह सब गुज़र जाएंगे। मगर दिली तमन्ना हो कि ईमान पर ख़ातिमा हो।**

औलिया अल्लाह को इसकी बड़ी फ़िक्र रहती थी। उनके हालात आप पढ़ें जिनके पढ़ने से ईमान ताज़ा होता है उनको यह फ़िक्र रहती थी। बल्कि दूसरों से दुआएं कराया करते थे कि ख़ातिमा बख़ैर हो। सबके दिल में यही तमन्ना रहती थी और अल्लाह तआला ने उनका ख़ातिमा बख़ैर फ़रमाया और आज भी उनका ज़िक्र बाक़ी रखा (जैसा कि उनके हालात से पता चलता है।)

आप यह रमज़ान खत्म होने के बाद यह न समझें कि अब छुट्टी हो गई अब हम आजाद हैं जो चाहें करें हरगिज़ ऐसा नहीं। आप आज़ाद बिल्कुल नहीं हैं। **आपके गले में इस्लाम का तौक़ पड़ा हुवा है आपकी तख़्ती, आपके शनाख़्ती कार्ड पर लिखा है कि आप मुसलमान हैं।** अल्लाह तआला के यहां इस रोज़े का (रमज़ान के रोज़े का) और उस रोज़े का (तमाम उम्र के रोज़े का) हिसाब किताब होगा। हमने आपके सामने आयत पढ़ी थी। **अल यौमा अकमल तो लकुम दीन कुम व अतमम तो अले कुम नैमती व रदी तो लकोमुल इस्लामा दीना** मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया कोई तब्दीली लाना चाहे, हुकूमत कहे, बादशाह कहे, मिनिस्टर कहे राज्यपाल कहे कि ऐसा करो और वह करना चाहे चाहे बडे से बडा

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमान आलिम कहे कुछ होने को नहीं **जो चीज़ हराम है वह क़यामत तक हराम रहेगी।** दुनिया में किसी को यह इजाज़त नहीं और नहीं किसी की मजाल है कि उसमें रद्दो बदल करे। शरीअत में अब कोई रद्दो बदल नहीं हो सकती। **वह चीज़े जो हराम हैं वह हराम ही रहेंगी।**

यहां से आप पक्का इरादा करके जाइये कि अगर किसी की ज़मीन आपके क़ब्ज़े में है और वह आपकी नहीं है तो उस बड़े रोज़े का तक़ाज़ा है कि आप उस जाइदाद को छोड़ दें। अल्लाह तआला उस पर बड़ा खुश होगा। कि आप अल्लाह के ख़ौफ़ और डर से ऐसा कर रहे हैं। और सामने वाले से कहें कि अपनी जाइदाद और अपना तरका यह तुम्हें मुबारक अब हम यह तुम्हें वापस दे रहे हैं **हमने अब तोबा कर ली है।** तुम लोग झूट बोलना, झूटी गवाही देना, दिल दुखाना, गाली बकना, ना जाइज़, हराम आमदनी, रिश्वत वगैरह जिन से पैसे मिलते हैं **यह सब हराम ही हैं और क़यामत तक हराम और नाजाईज़ ही रहेंगे।** इसी तरह ब्याज है कि कुछ लोग उसको जाइज़ कर रहे हैं। किस क़द्र अफ़सोस की बात है। **जो चीज़ शरीअत ने हराम क़रार दे दी क़यामत तक हराम ही रहेंगी।** पूरी-पूरी कोशिश कीजिए की आपका रोज़ा सही तरीक़े पर ही अफ़तार हो (ईमान पर ही ख़ातिमा हो)

एक अल्लाह वाले थे। उनकी किसी ने बड़ी खिद्मत का इरादा किया। शाह ग़ुलाम अली साहब मुजद्दी देहलवी रहमतुल्ला अलेह नक्श बनदिया सिलसिले के बड़े मशाइख़ में से थे। (नवाब साहब टोंक ने इरादा किया) जब उन्होंने सुना कि हज़रत के यहां पांच-पांच सौ आदमी रहते हैं और खाना खाते हैं और आपको उनकी ज़रूरियात पूरी करना पड़ती है कोई आमदनी नहीं, कोई जाइदाद नहीं तो नवाब साहब ने एक बड़ी रक़म पेश करना चाही और अर्ज़ किया कि हज़रत उसको क़बूल फ़रमाले आपने (शाह ग़ुलाम अली साहब ने) फ़रमाया कि फ़क़ीर ने रोज़ा रखा था। और जब सूरज डूबने लगे तो कोई रोज़ा नहीं तोड़ता। अब मेरी उम्र का सूरज डूबने के क़रीब है। अब कोई जितना कहे कि यह चीज़ें ले लो यह दवा खालो में रोज़ा नहीं खोलूंगा।

www.abulhasanalinadwi.org

कि तमाम दिन रोज़ा रखा और अब जब अफ़तार का वक्त क़रीब है तो रोज़ा तोड़ दूं और उन्होंने रक़म लेने से साफ़ इन्कार कर दिया।

हर आदमी **(चाहे मर्द हो या औरत)** को यह समझना चाहिए कि यह इस्लाम का रोज़ा है सारी उम्र का रोज़ा है। कभी नहीं टूट सकता जो चीजें हराम हैं वे हराम हैं ग़लत हैं वे ग़लत हैं

अक़ीदा (दिल का पक्का भरोसा) ख़ालिस होना चाहिए। **समझ लीजिए न किसी मज़ार से** कुछ मिल सकता है न कोई वली कुछ दे सकता है **दुनिया से चले जाने के बाद वह बेबस हैं।** और नहीं क़िस्मत बुरी भली बना सकते हैं और नहीं कोई आई हुई बला को टाल सकते हैं। न औलाद दे सकते हैं नहीं नौकरी दिला सकते हैं। जो कुछ मांगना हो उसी अल्लाह से मांगों जो समी और मुजीब है। **(व इज़ा सआलका ईबादी अन्नी फइन्नी करीब, ओजीबो दावतददा ए इज़ा दआने फ़लयसतजीबूली वल युमिनू बी लअल्लहुम यर शोदून) पारा २ रुकुअ ७**

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा बंदा तुझ से मेरे बारे में पूछे तो कह दीजिए कि में क़रीब, (पास हूं) दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता हूं जब वह दुआ करे। तो क्यों न हम अल्लाह तआला से मांगे। ख़ुदा के सिवाए वह चीज़ जो क़ुदरत इलाही से ताल्लुक़ रखती है क़िस्मत बनाने और बिगाड़ने वाले से ताल्लुक़ रखती है और क़ादिरे मुतलक़ से ताल्लुक़ रखती है और जो किसी के दस्तरस में नहीं है। यह ठीक है कि किसी के पास रोटी ज्यादा हो मांग ले। कपड़ा ज्यादा हो मांग लें। किसी से कुछ इमदाद मांग ले। लेकिन वह चीज़ें मसलन औलाद का मांगना, क़िस्मत अच्छी करना। आई हुई बला को टाल देना यह किसी के क़ब्ज़े में नहीं है **सिर्फ अल्लाह तआला के ही क़ब्ज़े क़ुदरत में है।**

बस आप यहां से बड़े रोज़े का ख्याल लेकर जाएं। खुश होईये। अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए यह छोटा रोज़ा तो खत्म हो रहा है। अल्लाह और रमज़ान नसीब करे। मगर ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं। तन्दुरस्ती का कोई

भरोसा नहीं। हां बड़ा रोज़ा रहेगा वह रोज़ा मुबारक हो उस रोज़े का ध्यान रखिए वह रोज़ा न तोड़िएगा वह रोज़ा अगर **टूटा तो सब कुछ टूट जाएगा। सब कुछ बिगड़ जाएगा।** (और दोज़ख का मुंह देखना पड जाएगा)

बस यही दो रोज़े हैं एक रोज़ा करीब ख़त्म होने के है (रमज़ानुल मुबारक का रोज़ा) यह दिनभर का रोज़ा हैं। एक रोज़ा वह है जो ज़िंदगी के साथ रहेगा और मुसलमान के लिए जब से वह जवान हुआ (बालिग़ हुआ) तब से शुरू होकर उस दिन तक बाक़ी रहेगा जब तक जान में जान है और सांस है और जिस्म में रूह है।

अल्लाह तआला हमें और आपको तौफ़ीक़ दे कि हम और आप उस रोज़े को बरक़रार रखें उस रोज़े की हिफ़ाज़त करें और क़द्र करें और उस रोज़े पर जियें और उस रोज़े को बरक़रार रखते हुए हमारा और आपका दम निकले। (इस्लाम के हुक्मों पर अमल करते हुए) आमीन।

रब्बना तवफ्फ़ना मुसलिमव व तक़ब्बल इसलामना व आख़िरो दावाना अनिल हमदो लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

www.abulhasanalinadwi.org